दीपान्विति

घटनाओं, विचारों और कहानियों की कड़ियाँ



1 अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा सम्मेलन एवं बहुभाषी काव्य गोष्ठी के प्रतिभागी एवं गणमान्य अति थगण

बहुभाषी विचार गोष्ठी

फ्रैंकफर्ट में भारतीय जयकार

जर्मनी में भाषाओं का समागम: हिंदी, तमिल, तेलुगू, मराठी, कन्नड़, पंजाबी, संस्कृत, मैथिलि एक मंच पर एकत्रित

बहुभाषी काव्य गोष्ठी

दिल से दिल तक बात पहुँची

चिंतन से चेतना तक, कोमल मन से वेदना तक, जयघोष से मानव रंजना तक – भाव अनेक, उद्देश्य एक – अखंडता में एकता का दीपक जलाना

पुस्तक प्रदर्शनी

पुस्तक प्रेमियों का उत्सव

विभिन्न भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का समागम – कविता, कहानियाँ, कॉमिक्स, धर्म, कर्म, विचार और संवाद का अनूठा प्रदर्शन



संस्कृति के विविध रँग

विदेशी ज़मीन पर देशी लोगों के विचारों के आदान-प्रदान का सुनहरा अवसर है बहुभाषी सम्मेलन जहाँ 'मैं' 'हम' हो जाता है और 'हम' में सम्पूर्ण विश्व समा जाता है।

त्रि-स्तरीय हिंदी शिक्षण मॉडल कारगर: दीपा लाभ

बर्लिन, जर्मनी से हिंदी विशेषज्ञ दीपा लाभ ने 'हिंदी की स्थिति: चुनौतियाँ एवं अवसर' पर अपने विचार साझा करते हुए बताया कि जर्मनी में हिंदी को लोकप्रिय बनाने हेतु इसे नए सन्दर्भ में नए तरीके से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है - यह मातृभाषा से आगे हेरिटेज लैंग्वेज, उससे आगे फॉरेन लैंग्वेज, और उससे भी आगे अकादमिक और प्रोफेशनल लैंग्वेज बनाने की दिशा में कार्य करना होगा।



दीपा लाभ, मी ड्याकर्मी, ब र्लेन जर्मनी

जर्मनी में भारतीय भाषाओं का ऐतिहासिक मिलन

फ्रैंकफर्ट का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न

फ्रैंकफर्ट, जर्मनी में आयोजित प्रथम अंतरराष्ट्रीय भारतीय भाषा संगोष्ठी एवं अंतरराष्ट्रीय कवि सम्मेलन में हिंदी भाषा के प्रतिनिधि के रूप में दीपा लाभ का सक्रीय योगदान। 22 अगस्त 2026 की दोपहर फ्रैंकफर्ट का साल्बाउ गैलस सभागार विचारों और मनोरंजन के अद्भुत संगम का साक्षी बना। काव्य गोष्ठी, पुस्तक विमोचन, विभिन्न भारतीय भाषाओं के पुस्तकों की प्रदर्शनी एवं "जर्मनी में भारतीय भाषाओं की स्थिति,



चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ" विषय पर गहन विमर्श करता यह सम्मेलन भारतीय भाषाओं के वैश्विक प्रासंगिकता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। इस अवसर पर जर्मनी के विभिन्न शहरों से भारतीय भाषाओं के उत्थान के लिए कार्यरत अनेक दिग्गजों व विभिन्न क्षेत्रीय संस्थानों के प्रतिनिधियों, जिनमें शिक्षक, छात्र, शोधार्थी एवं प्राध्यापक भी शामिल हैं, ने अपनी सक्रीय भागीदारी दी। आयोजन को न केवल जर्मनी के भाषाप्रेमियों, अपितु भारत, नीदरलैंड, बर्मिंघम, लन्दन सहित कई यूरोपीय देशों के कवियों, शिक्षाविदों व भाषाप्रेमियों का सान्निध्य मिला। हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, पंजाबी, ओड़िया, मैथिलि सरीखे विभिन्न भारतीय भाषाओं को एक मंच पर एक सुर-एक भाव के साथ एक-दूसरे के पूरक के रूप में खड़ा देखना अत्यंत भावुक करने वाला क्षण था और इस ऐतिहासिक अवसर का साक्षी होना सभी प्रतिभागियों के लिए गर्व की बात है। एक तरफ काव्य गोष्ठी में कविता नहीं, भावों की वर्षा हुई, वहीं दूसरी तरफ भारतीय भाषा गोष्ठी में ज्ञान और विचारों का सूरज चमका। कविता सत्र में हिंदी में नारी शक्ति की गर्जना, मराठी में बचपन से यौवन की ओर बढती युवती का वर्षा ऋतु के साथ संबंध, पंजाबी में मीठे बोल की गूँज और तेलगू के कर्नाटक संगीत के साथ संबंधों की मधुर तान –



विविध भाषा, विविध भावों से सराबोर इस सेमिनार ने आरंभ से ही सभी को अपनी-अपनी कुर्सियों से बाँध दिया। “दिल से दिल तक” (नीदरलैंड के वरिष्ठ कवि विश्वास दूबे का काव्य-संकलन) उतरते कविताओं की बौछार ने मनोरंजन के साथ-साथ मंथन और विमर्श के कई नए आयाम खोले। कहीं नयी पीढ़ी का हिंदी के साथ संबंध का सत्य बयाँ (तितिक्षा शाह, बर्मिंघम) हुआ तो कहीं विदेश में बैठे बच्चे का माँ और घर छूटने का दर्द (अद्वैत बावडेकर, छात्र-जर्मनी) फूटा। बेल्जियम के वरिष्ठ कवि कपिल कुमार ने अपने अनोखे अंदाज से सभा में उपस्थित सभी श्रोताओं को मंच के निकट आने को बाध्य कर दिया तो वहीं कोलोन की रचनाकार डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना ने अपने अनोखे अंदाज़ में मंच-सञ्चालन कर सबको मंत्रमुग्ध किया। देववाणी संस्कृत से सत्र का आरंभ भारतप्रेमियों के लिए गर्व का क्षण था। हिंदी, मराठी, कन्नड़, तमिल, तेलगु आदि भाषाओं को जर्मनी के शिक्षण व्यवस्था में स्थापित करने के विभिन्न प्रयासों, क्रियाकलापों व भविष्य की योजनाओं पर विमर्श से सेमिनार की उपयोगिता ऐतिहासिक महत्त्व की कही जा सकती है। प्रतिभागियों ने नए भाषा को नयी उड़ान देने हेतु संकल्प लिए।

भारत से अनिल जोशी (अध्यक्ष, वैश्विक हिंदी परिवार), डॉ. जवाहर कर्नावट (निदेशक, अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल), अरुण महेश्वरी (अध्यक्ष, वाणी प्रकाशन) की उपस्थिति से सम्मेलन की सार्थकता सिद्ध हुई। भारतीय दूतावास, फ्रैंकफर्ट से भुपेंद्र सिंह निखुरपा, लन्दन से पद्मेश गुप्त (संरक्षक, वैश्विक हिंदी परिवार), फ्रैंकफर्ट के प्रतिष्ठित समाज सेवी रमेश शर्मा, राकेश भटनागर (संस्कृतिकर्मी, जर्मनी), टूबिंगन विश्वविद्यालय से इंडोलॉजी के प्राध्यापक दिव्यराज अमिय, फ्रैंकफर्ट विश्वाविद्यालय के वरिष्ठ इंडोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. अजीत सिंह, तमिल संगम के अध्यक्ष बालाजी बालू हरिदास, विश्व हिन्दू परिषद् के प्रतिनिधि गिरिराव कौमुरी तथा रुद्रदेव देवुल्पल्ली, रंजीत चौधरी, चित्रा अग्रवाल, एवं राहुल नारायण सरीखे अनेक स्थानीय एवं वैश्विक हस्ताक्षरों का संरक्षण एवं मार्गदर्शन मिला। इनके अतिरिक्त जर्मनी की लोकप्रिय कवियत्रियाँ पाँखुरी भटनागर, अश्विनी केगांवकर, रश्मि त्रिवेदी, शिल्पा गडमडे मुले, शेफाली गुप्ता, शोभा चौहान ने अपनी कविताओं से आनंदित किया। भाषा, भाव व विचारों का यह अद्भुत समागम वास्तव में स्मृति पटल पर अंकित एक ऐतिहासिक घटना है।